



## 10. त्वमेका भवानि



संस्कृत साहित्य में स्तोत्रकाव्य की एक विशिष्ट परम्परा रही है। स्तुति करने के साधन रूपी पद्यों को स्तोत्र कहा जाता है। इस प्रकार के स्तोत्र कभी-कभी मुक्तक के रूप में एक-दो की संख्या में तो कभी चार, पाँच, छः, सात, आठ इत्यादि श्लोकों की संख्या में निबद्ध होते हैं। स्तोत्र साहित्य में आदिशंकराचार्य द्वारा रचित स्तोत्र सर्वाधिक प्रसिद्ध हुए हैं। इन्होंने कुल कितने स्तोत्रों की रचना की है, इसका निश्चित अनुमान नहीं किया जा सकता। बहुत से स्तोत्र इनके नाम से प्रसिद्ध हो गए हैं। उनके नाम से प्रसिद्ध एक-आठ श्लोक वाले स्तोत्र में से पाँच श्लोक पसन्द करके यहाँ प्रस्तुत किए गए हैं।

यहाँ जगदम्बा भवानी की स्तुति की गई है। स्तुति के प्रत्येक श्लोक में भक्त की अनन्य शरणागति और अबोध बालक की भक्ति का अनवरत दर्शन होता है। प्रस्तुत श्लोकों में किए गए वर्णन के अनुसार इन स्तोत्रों को गानेवाले व्यक्ति (भक्त) को अपने सांसारिक संबंधियों, जैसे कि माता-पिता, भाई-बहन, पुत्र-पुत्री या पति-पत्नी - में जरा सी भी रुचि नहीं है। उनके लिए तो माँ भवानी ही सर्वस्व हैं। अतः, शास्त्र, तप, तीर्थ, व्रत और उपवास जैसे स्थूल बाह्य कर्म-काण्डों की ओर भी रुचि नहीं है। उन्हें तो मात्र अपनी आराध्य देवी भवानी की शरण में रहना पसन्द है। उन्हें पूर्ण विश्वास है कि चाहे कैसी भी परिस्थिति हो माँ भवानी हमारी रक्षा करेंगी।

अच्छी तरह से गाए जा सकने वाले इस स्तोत्र के माध्यम से यह बोध ग्रहण करना चाहिए कि बाह्य कर्मकांड के अतिरिक्त अनन्य श्रद्धा और सादगी से भरपूर गुणात्मक जीवन जीना अति महत्त्वपूर्ण है। इस तरह जीने वाले व्यक्तियों की रक्षा माँ भवानी सदैव करती हैं।

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता  
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।  
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव  
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 1 ॥

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं  
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।  
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं  
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 2 ॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं  
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।  
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातः  
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 3 ॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे  
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये ।  
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि  
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 4 ॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो

महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।

विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाऽहं

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ 5 ॥

### टिप्पणी

**संज्ञा :** ( पुल्लिङ्ग ) तातः पिता बन्धुः भाई, सगे-सम्बन्धी भृत्यः नौकर, सेवक, चाकर विषादः दुःख, अफसोस प्रमादः आलस अनलः अग्नि लयः तल्लीन होना, मिट जाना

( स्त्रीलिङ्ग ) जाया पत्नी वृत्तिः नौकरी, व्यवसाय भवानी पार्वती का एक नाम 'भव' अर्थात् शिव की पत्नी मुक्तिः मोक्ष ( जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होना ) भक्तिः भगवान की उपासना करने की प्रक्रिया ( पुराण के अनुसार भक्ति के नौ प्रकार हैं । ) विपत्तिः आपत्ति, मुसीबत

( नपुंसकलिङ्ग ) व्रतम् व्रत ( संस्कृत में इस शब्द का प्रयोग पुल्लिङ्ग में किया जाता है । नियमित रूप से किए जाने वाले पुण्यकर्म को और धर्म की भावना से अमुक कार्य न करने संबंधी स्वेच्छा से किए गए निश्चय को व्रत कहते हैं ) । अरण्यम् वन, जंगल शरण्यम् आश्रयस्थान, शरण स्थल

**विशेषण :** अनाथः जिसका कोई नाथ या स्वामी ( माता-पिता ) न हो वह दरिद्रः निर्धन, गरीब जरारोगयुक्तः वृद्धावस्था रूप रोग से युक्त महाक्षीणदीनः खूब क्षीण-घिसा हुआ ( दुर्बल ) और कंगाल ( दीन = कंगाल, डरपोक ) जाड्यवक्त्रः जड़वत् मुखवाला ( अहम् ) विपत्तौ प्रविष्टः ( अहम् ) मुसीबत में प्रविष्ट, मुसीबत ( आफत ) में प्रवेश किया हुआ प्रणष्टः ( अहम् ) नष्ट हुआ ( मैं )

**अव्यय :** कदाचित् कभी-कभी, कभी वापि और फिर

**समास :** ध्यानयोगम् ( ध्यानस्य योगः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष ) । स्तोत्रमन्त्रम् ( स्तोत्रम् च मन्त्रः च - स्तोत्रमन्त्रम् - समाहार द्वन्द्व ) । न्यासयोगम् ( न्यासस्य योगः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष ) । शत्रुमध्ये ( शत्रूणां मध्यः, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष ) । अनाथः ( न विद्यते नाथः यस्य सः - बहुव्रीहि ) । जरारोगयुक्तः ( जरा च रोगः च ( जरारोगौ - इतरेतर द्वन्द्व ), जरारोगाभ्यां युक्तः - तृतीया तत्पुरुष ) । महाक्षीणदीनः ( क्षीणः च दीनः च ( क्षीणदीनौ - इतरेतर द्वन्द्व ), महान्तौ च तौ क्षीणदीनौ - कर्मधारय ) । जाड्यवक्त्रः ( जाड्यं वक्त्रं यस्य सः - बहुव्रीहि ) ।

### विशेष

**1. शब्दार्थ : न जानामि** मैं नहीं जानता ध्यानयोगम् ध्यान-योग को ( किसी देव या परब्रह्म की मानसिक चिन्तन प्रक्रिया को ध्यान योग कहा जाता है ) तन्त्रम् तंत्र को, पूजा की एक प्रकार की पद्धति को ( अति मानवीय शक्ति की प्राप्ति के लिए इस प्रकार की पूजा की जाती है । ) स्तोत्रमन्त्रम् स्तोत्र और मन्त्र को ( जिन पद्यों के माध्यम से स्तुति की जाती है उसे स्तुति कहा जाता है । इस प्रकार के पद्य लौकिक छन्दों में रचे जाते हैं । जब कि वेद में निरूपित इन पद्यों को मन्त्र कहा जाता है । ये मंत्र ( ही ) ऋषियों के दर्शन हैं । ) न्यासयोगम् न्यास योग को ( शरीर के विभिन्न अंगों में भिन्न-भिन्न देवताओं के मन्त्र पाठ के साथ ध्यान करने की प्रक्रिया को न्यासयोग कहा जाता है । ) मातः हे माँ ! मां प्रपाहि मेरी रक्षा करो

**2. सन्धि :** तातो न ( तातः न ) । बन्धुर्न ( बन्धुः न ) । पुत्रो न ( पुत्रः न ) । भृत्यो न ( भृत्यः न ) । वृत्तिर्ममैव ( वृत्तिः मम एव ) । ममैव ( मम एव ) । गतिस्त्वम् ( गतिः त्वम् ) । चानले ( च अनले ) । अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो महाक्षीणदीनः ( अनाथः दरिद्रः जरारोगयुक्तः महाक्षीणदीनः ) । सदाऽहम् ( सदा अहम् ) ।

त्वमेका भवानि

## स्वाध्याय

### 1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

- (1) वृत्तिः शब्दस्य कः अर्थः ? ○
- (क) जीवनचर्या (ख) वर्तनम् (ग) प्रवृत्तिः (घ) निर्वृतिः
- (2) कुत्र प्रविष्टस्य भक्तस्य भवानी एका एव गतिः वर्तते ? ○
- (क) व्रते (ख) वने (ग) विपत्तौ (घ) सर्वत्र
- (3) भवानि इति ..... पदम् अस्ति । ○
- (क) क्रियापदम् (ख) संबोधनपदम् (ग) कर्तृकारकम् (घ) कर्मकारकम्
- (4) न जानामि ..... लयं वा कदाचित् । ○
- (क) पूजाम् (ख) व्रतम् (ग) मुक्तिम् (घ) प्रलयम्
- (5) गतिस्त्वं ..... भवानि । ○
- (क) प्रपाहि (ख) वयम् (ग) त्वमेका (घ) भवान्

### 2. उदाहरणानुसारं परिचयं कारयत ।

पद	शब्द	लिङ्ग	विभक्ति-वचन
उदाहरणम् : विपत्तौ	विपत्ति	इकारान्त स्त्रीलिङ्ग	सप्तमी एकवचन
(1) पूजाम्	.....	.....	.....
(2) वृत्तिः	.....	.....	.....
(3) जले	.....	.....	.....
(4) त्वम्	.....	.....	.....
(5) व्रतम्	.....	.....	.....

### 3. रेखाङ्कितपदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कुत्र, किम्, कः, का)

- (1) अहं ध्यानयोगं न जानामि ।
- (2) मम वृत्तिः नास्ति ।
- (3) अरण्ये सदा मां प्रपाहि ।

### 4. समासप्रकारं लिखत ।

- (1) अनाथः ..... (2) शत्रुमध्ये .....
- (3) जाड्यवक्त्रः ..... (4) ध्यानयोगम् .....

### 5. मातृभाषयाम् उत्तरं लिखत ।

- (1) भक्त अपने किन स्वजनों को छोड़कर माता को अपनी एकमात्र गति मानते हैं ?
- (2) भक्त क्या-क्या नहीं जानता ?
- (3) किन परिस्थितियों में भक्त माता से रक्षा करने की प्रार्थना करता है ?
- (4) अनाथो दरिद्रो.... श्लोक में भक्त ने अपने लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया है ?

### 6. श्लोकपूर्ति कुरुत ।

- (1) विवादे विषादे ..... त्वमेका भवानि ॥
- (2) अनाथो दरिद्रो ..... त्वमेका भवानि ॥

#### प्रवृत्ति

- आदि शंकराचार्य रचित कोई अन्य स्तोत्र ढूँढ़कर पढ़िए।
- कक्षा में इस स्तोत्र का समूहगान कीजिए।

